नहीं है। तथापि, राज्य सरकार द्वारा दी गई सूचना के अनुसार पिछले तीन वर्षों के दौरान क्षय रोग से मरने वाले व्यक्तियों की संख्या इस प्रकार है :—

वर्ष	मौतें
1985	589
1986	728
1987	606

ये आंकड़े चिकित्सा संस्थाओं में इलाज किए गए रोगियों के हैं। ये आंकड़े अनन्तिम और अधूरे है और अस्पष्ट कवरेज के कारण इनकी तुलना नहीं की जा सकती।

(ख) राष्ट्रीय क्षय रोग नियंत्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत राज्यों द्वारा देश के प्रत्येक जिले में एक जिला क्षयरोग केन्द्र खोला जा रहा है जिससे रोगियों और लोगों को निदान, उपचार और निवारक सुविधाएं प्रदान करने के लिए जिले की सामान्य स्वास्थ्य संस्थाओं के साथ-साथ व्यापक स्तर पर जिला क्षयरोग कार्यक्रम चलाया जा सके। अब तक देश में 371 जिला क्षयरोग केन्द्र खोले गए हैं। इसके अतिरिक्त 300 क्षय रोग क्लीनिक भी कार्य कर रहे हैं। लगभग 46,000 क्षय रोग पलंग भी उपलब्ध हैं जो आपाती रोगियों, जटिल समस्या वाले रोगियों और शल्य चिकित्सा वाले रोगियों की आवश्यकताओं को पूरा कर रहे हैं।

व्यापक रोग प्रतिरक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत निवारक उपाय के रूप में बी॰ सी॰ जी॰ का टीका लगाया जा रहा है।

राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को राष्ट्रीय क्षय रोग नियंत्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत क्षय रोधी औषधें, एक्सरे मशीनें/फिल्म रोल तथा उपकरण प्रदान किए जा रहे हैं। क्षय रोगियों को औषधियां निःशुल्क प्रदान की जाती हैं।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन में अध्यापकों द्वारा पदोन्नतियों को ठुकराया जाना

1803. **श्री सन्तोष बागड़ोदिया :** क्या मानव संसाधन विकास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि केन्द्रीय विद्यालय संगठन के पिछले शैक्षिक सत्र में लगभग 500 अध्यापकों ने उनको मिलने वाली पदोन्नति को ठुकरा दिया;

(ख) यदि हां, तो उसके क्या कारण थे;

(ग) क्या यह सच है कि केन्द्रीय विद्यालय संगठन की तबादला-नीति के तहत पदोन्नति पाने वालों को जिले और भाषाई क्षेत्र से बाहर जाना होता है;

(घ) क्या सरकार को इस वर्तमान नीति को बदलने और पूर्व नीति को कायम रखने के लिये कुछ संसद सदस्यों से कोई सुझाव प्राप्त हुये हैं; और

(ङ) यदि हां, तो उन पर सरकार की क्या प्रतिक्रिया है?

मानव संसाधन विकास मंत्रालय में शिक्षा और संस्कृति विभागों में राज्य मंत्री (श्री एल॰ पी॰ साही) : (क) पी॰जी॰टी॰ के रूप में पदोन्नति के लिए जिन 146 टी॰जी॰टी॰ का प्रस्ताव किया गया था, उन में से अभी तक 96 ने पदोन्नति अस्वीकार कर दी है। इसी प्रकार से उप-प्रधानाचार्य के रूप में जिन 98 पी॰जी॰टी. को पदोन्नति की पेशकश की गयी थी, उनमें से 33 ने पदोन्नति अस्वीकार कर दी है।

(ख) दिए गए कारण सामान्यतया पारिवारिक समस्याओं और नियुक्ति के स्थान की अनुपयुक्तता से सम्बन्धित होते हैं।

(ग) जी, हां। वर्तमान नीति के अनुसार पी॰जी॰टी. के रूप में पदोन्नति पर किसी भी टी॰जी॰टी॰ और भर्ती

पर अथवा उप-प्रधानाचार्य के रूप में पदोन्नति पर किसी भी पी०जी०टी० को केन्द्रीय विद्यालय संगठन में उसके क्षेत्र तथा भाषाक्षेत्र से बाहर नियुक्त किया जाता है।

(घ) जी, हां।

(ङ) केन्द्रीय विद्यालय संगठन के शासी बोर्ड संसद सदस्यों, शिक्षक संगठनों तथा व्यक्तियों से प्राप्त सुझावों के आधार पर इस बात से सहमत हो गया है कि पी०जी०टी० और उप-प्रधानाचार्य के रूप में पदोन्नत किए गए शिक्षकों को या तो क्षेत्र से बाहर या भाषा क्षेत्र के बाहर नियुक्त किया जाएगा। यह 1.5.89 से प्रभावी होगा।

राजस्थान में प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र

1804. **श्री सन्तोष बागड़ोदिया** : क्या **स्वास्थ्य और परिवार कल्याण** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) राजस्थान में कितने प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र हैं तथा उनमें से कितने केन्द्रों को केन्द्रीय सरकार से अनुदान प्राप्त हो रहा है;

(ख) ये केन्द्र किन-किन स्थानों पर हैं और उनमें प्रत्येक वर्ष कितने रोगियों का उपचार किया जाता है; और

(ग) इस वर्ष इस प्रकार के कितने केन्द्र खोलने का विचार है तथा किन-किन स्थानों पर?

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री (कुमारी सरोज खापर्डे) : (क) और (ख) राजस्थान मे प्राकृतिक चिकित्सा के कुल कितने केन्द्र हैं इसके बारे में सरकार को कोई जानकारी नहीं है। केन्द्रीय योग और प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद ने प्राकृतिक चिकित्सा में अनुसंधान करने के लिए विगत काल में दो संस्थानों को आर्थिक सहायता दी थी (विवरण–I) (नीचे देखिये)।

इन संस्थाओं में उपर्युक्त अनुसंधान योजनाओं के अन्तर्गत स्वीकृत पलंगों पर भरती किए गये रोगियों की संख्या का एक विवरण संलग्न है (विवरण–II) (नीचे देखिये)।

(ग) केन्द्रीय योग और प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद का फिलहाल स्वयं कोई प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र खोलने का प्रस्ताव नहीं है। प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र गंगाशहर, बीकानेर, जयपुर ने परिषद से इस योजना को एक वर्ष तक और बताने का आवेदन किया है। इसके अलावा सोभाग प्राकृतिक यौगिक उपचार एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर ने सहायता अनुदान देने के लिए परिषद के विचारार्थ "रक्तचाप, मधुमेह, दमा व मोटापा के उपचार तथा बीमारियां की रोकथाम एवं स्वास्थ्य संवर्धन की यौगिक और प्राकृतिक चिकित्सा की विधियों की प्रभावकारिता का अध्ययन" नामक एक अनुसंधान उन्मुख योजना प्रस्तुत की है।

विवरण–I

संस्थान का नाम	योजना का नाम	शुरु होने की तारीख	समाप्त होने की तारीख
1. प्राकृतिक चिकित्सा अस्पताल, बापूनगर, जयपुर	पौष्टिक उपचारात्मक और निवारक पहलुओं पर प्राकृतिक विधियों की प्रभावकारिता का सामान्य अध्ययन	16-12-1981	15-12-1984